

भक्ति खण्ड

देवभक्ति

(१)

एक तुम्हीं आधार हो जग में, अय मेरे भगवान ।

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥

सँभल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान ।

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥टेक ॥

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम-बोध कला विस्तारी ।

मैं चेतन, तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी ॥

निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षयनिधि महान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥१॥

दुनिया में इक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा ।

मैं शिवभूप रूप सुखकंदा, ज्ञाता-दृष्टा तुम-सा बंदा ॥

मुझ कारज के कारण तुम हो, और नहीं मतिमान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥२॥

सहज स्वभाव भाव दरशाऊँ, पर परिणति से चित्त हटाऊँ ।

पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ, सिद्ध समान स्वयं बन जाऊँ ॥

चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है 'सौभाग्य' प्रधान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥३॥

(२)

तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि को दिखाती है ।

विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है ॥टेक ॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी! लखा है रूप मैं मेरा ।

तजूँ कब राग तन-धन का, ये सब मेरे विजाती हैं ॥१॥